शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

यीशु कौन है?

अध्याय 1 : यीशु मसीह कौन है?

परिचय

यह अध्याय शिष्यों के लिए आवश्यक मॉड्यूल का एक भाग है, जिसे "यीशु कौन है?" शीर्षक दिया गया है। सात अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही दृष्टिकोण, उसकी पहचान, कार्य, शिक्षाओं व मृत्यु से यीशु मसीह के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है। यीशु मसीह विश्वास व धर्म का केन्द्र–बिन्दु है, इसलिए शिष्यों के लिए यीशु को जानना, और जो लोग नये विश्वासीगण हैं, उनके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि कौन सी बातें यीशु को अनोखा तथा हमारी भक्ति व अनुपालन के योग्य बनाती है। आपके प्रतिभागी विभिन्न संस्कृति या पृष्ठभूमि से सम्बन्धित हो सकते हैं, जो यीशु के अस्तित्व व शिक्षाओं के बारे में अलग विचार रखते होंगे। यह श्रृंखला शिष्यता के क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए अति उत्तम बुनियाद साबित होगी।

अपेक्षित श्रोतागण्

इस पाठ्यक्रम के लिये अपेक्षित श्रोतागण नये विश्वासी या उद्धार से सम्बन्धित बुनियादी मसीही सिद्धान्तों पर पुनः विचार करने के इच्छुक मसीही लोग हैं। जो लोग सुसमाचार प्रचार करने या लोगों को शिष्य बनाने की तैयारी कर रहे हैं; वे इस पुस्तक की विषय–वस्तु से लाभान्वित हो सकते हैं। यह पाठ्यक्रम अपेक्षा करता है कि पाठकों ने यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने का निर्णय ले लिया है और वे मसीहीयत के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।

अगुवों की मार्गदर्शिका को उन अध्यायों या पाठों को तैयार करने हेतु सहायता करने के लिये बनाया गया, जिसे www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व" सामग्री के साथ उपयोग किया जा सके।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

यीशु कौन है?
अध्याय 1 : यीशु मसीह कौन है?

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य यह जानना है कि यीशु कौन है? – वह कहाँ और कैसे रहा, तथा उसने अपने बारे में क्या दावा किया।

अगुवों के नोट्स

हो सकता है आपके पास यीशु मसीह पर पहले से विश्वास करने वाले परिवारों से, दूसरों धर्मों की पृष्ठभूमि से आये विश्वासी या बिल्कुल नये विश्वासी प्रतिभागी हो सकते हैं। यह श्रृंखला उन लोगों के लिए आदर्श सामग्री है, जो जानना चाहते हैं कि मसीही धर्म में यीशु मसीह कौन है? आपको अपने श्रोताओं को समझाने के लिए इस विषय वस्तु को समझना या अपनाना ही होगा। यह सामग्री उन लोगों के लिए अधिक लाभदायक साबित हो सकती है, जो दूसरों को यीशु के बारे में बताना सीख रहे हैं। यीशु और उसके दावों के बारे में सही जानकारी हासिल करना किसी व्यक्ति द्वारा परमेश्वर के पुत्र यीशु पर विश्वास करने का पहला कदम है, जो हमारे सारे पापों को क्षमा कर सकता है।

परिचय

(समूह से पूछने हेतु निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें)

- जब आप संसार के इतिहास में प्रभावशाली व्यक्तियों के बारे में सोचते हैं, तो आपको किस व्यक्ति का ख्याल आता है? उन्होंने अपने जीवन के द्वारा किस प्रकार संसार को परिवर्तित किया और वे क्या पद–चिन्ह पीछे छोड़ गये?
- यीशु नाम का आपके लिए क्या मायने व अभिप्राय है?
- मसीही लोग यीशु को अनेकों "उपाधियों" या "पदवियों" से जानते हैं, जैसे "मार्ग, सत्य, और जीवन"। क्या आपको और कोई सुना हुआ नाम याद आता है?
- यदि कोई आपसे पूछे कि यीशु कौन है और वह मसीहियों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है, तो आप क्या उत्तर देंगे?

अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बातों के निर्देश दें :

शिक्षाएँ

- **इतिहास में यीशु :** संसार के अनेकों धर्म यीशु के बारे में इसके बावजूद भी कि वे धर्म को नहीं मानते, बल्कि विज्ञान और मानवता पर विश्वास करते है, यीशु को इतिहास का विशिष्ट व्यक्ति या एक उत्तम आदर्श गुरू मानते हैं। इसलिए इतिहास व धर्म के प्रत्येक विद्यार्थी को खोजना चाहिए कि यीशु कौन था और उसने अपने बारे में क्या दावे किये।

- **वह किस काल में जीवित थे :** ऐतिहासिक लेखा व बाइबल हमें बताती हैं कि यीशु प्रथम शताब्दी की शुरूआत के आसपास, यहूदा के बैतलहम में पैदा हुए थे। बाइबल के बहुत–से पद बताते है कि यीशु का जन्म इतिहास के एक विशेष समय पर हुआ था।

  - मत्ती 2:1 हमें बताता है कि यीशु का जन्म राजा हेरोदेस के समय में हुआ था, जो 4 ई.पू. मर गया था।
  - लूका 2:2 बताता है कि यीशु का जन्म क्विरिनियुस की नाम लिखाई के समय हुआ था, जो सीरिया का हाकिम था। 6 ई.पू. में हुई जनगणना के बहुत से लेखे मौजूद हैं, जिसमें यहूदा का लेखा भी शामिल है।
  - लूका 3:1–2 से हमें पता चलता है कि तिबिरियुस कैसर के राज्य के पन्द्रहवें वर्ष में, यीशु का बपतिस्मा हुआ था। तब पेन्तुस पिलातुस यहूदा का हाकिम था।
  - प्रत्येक विशेष तिथियाँ बताती हैं कि यीशु इतिहास का एक सजीव व्यक्ति था, ना की कोई ऐतिहासिक काल्पनिक चरित्र, या वर्षों पुरानी किसी कहानी का मुख्य पात्र। सुसमाचार बहुत से पुख्ता प्रमाणों को प्रस्तुत करता है, जिसका विस्तृत विवरण इतिहास में यर्थात् के रूप में लिखा गया है।

- **यीशु की वंशावली :** यीशु अपने वंशजो को लेकर भी अनोखा था। सुसमाचार में बताया गया है कि उसका जन्म असाधारण रूप में अर्थात् एक कुँवारी के द्वारा हुआ था। उसकी माँ मरियम ने वैवाहिक सम्बन्ध की बजाय पवित्र आत्मा से गर्भधारण किया।

  - मत्ती 1 अध्याय हमें अब्राहम के वंश में दाऊद से होते हुए यीशु की वंशावली प्रदान करता है। यह यीशु के भूवासी पिता यूसुफ की वंशावली है। यूसुफ का वंशज होने से यह वंशावली यीशु को अब्राहम का वंशज तथा राजा दाऊद का वारिस बनाती है।

  - लूका 3:23–38 हमें दाऊद से वापस आदम तक यीशु की वंशावली के बारे में बताता है। हालांकि असल में यीशु की माता मरियम जिसका विवाह यूसुफ हुआ और यूसुफ जिसका पिता हेली था, उसकी वंशावली है। वंशावली साबित करती है कि खून व अधिकार दोनों तरह से, यीशु दाऊद के परिवार का हिस्सा था।

  - यीशु कौन था तथा वह क्या करने के लिए आया? यह दर्शाने के लिए वंशावलियाँ अति महत्वपूर्ण हैं। वह दाऊद के गौत्र में पैदा होने वाले अनन्त राजा की भविष्यद्वाणी पूरा करने के लिए आया था। यह "अनन्त राजा" स्वयं यीशु था।

- **यीशु का जीवन व सेवकाई :** सुसमाचार का लेखा – मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना – हमें यीशु व उसकी सेवकाई के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताते हैं। इन सुसमाचारों से हम यीशु के बारे में कुछ मूल जानकारियों को प्राप्त करते हैं।

  - यीशु गलील में पला–बढ़ा, जगह–जगह पर उपदेश देता रहा, और यरूशलेम में अपनी सेवकाई को पुरा किया।
  - यीशु ने अपने गोद लेने वाले पिता, यूसुफ से बढ़ई का काम सीखा था (मत्ती 13:55)।
  - उसके बहुत भाई थे – याकूब, योसेस, यहूदा, और शिमोन।
  - हालांकि यह प्रमाणित है कि यीशु पढ़े लिखे थे तथा तर्क व वाद–विवाद कर सकते थे, परन्तु हमें इस बात की बिल्कुल जानकारी नहीं है कि क्या मन्दिर के अलावा उसने कहीं और से भी शिक्षा पायी थी?
  - उसने यूहन्ना बपतिस्ता देने वाले से बपतिस्मा लिया था।
  - उसने आराधनालय, गलियों और अन्य स्थानों में चमत्कार व अद्‌भुत काम किये।

- o उसके बहुत से शिष्य और अनुयायी थे। और उसके बारह सबसे घनिष्ठ शिष्य बाद में प्रेरित कहलाए।
- o उसे मसीह होने का दावा करने के कारण बहुत से आरोपों का सामना करना पड़ा। उस पर यह मुकद्दमें महायाजक, कैफा और अन्त में रोमी गवर्नर पेन्तुस पिलातुस की हुकुमत में चले, और जिन्होंने यीशु को मृत्यु की सजा सुनाई।
- o यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए, मारे गए, कब्र में गाड़े गए, और तीसरे दिन मुर्दों में से जीवित हो गए। इसके पश्चात् उसे उन लोगों ने जीवित देखा, जो पहले उसके क्रूसीकरण के गवाह थे (1 कुरिन्थियों 15:3–8)।

❖ **यीशु ने अपने बारे में क्या कहा?** इतिहास में यीशु मसीह के अस्तित्व में हमारे अध्ययन व वर्तमान में हमारे जीवन में उसके महत्व को लेकर, हमें यह समझना आवश्यक है कि यीशु ने स्वयं अपने बारे में क्या कहा। उसके द्वारा कहे गए वाक्य अर्थहीन और उदासीन नहीं थे। वे स्पष्ट रूप से उसकी पहचान और मकसद दोनों को साफ तौर पर प्रगट करते थे। ये दावे महज़ किसी भविष्यद्वक्ता या भविष्य में होने वाले किसी उत्तम शिक्षक से सम्बन्धित नहीं थे। बल्कि वे दावे उससे भी बढ़कर थे।

➢ **उसने मसीह होने का दावा पेश किया :** सामरी स्त्री से बात करते हुए यीशु ने उस से स्पष्ट कहा कि वह मसीह है। स्त्री ने उससे कहा कि "मसीहा (जिसे मसीह कहा जाता है) आने वाला है। वह आकर हमें सारी बातें बता देगा।" यीशु ने उस स्त्री से कहा, – "जो तुझ से बातें करता है, वह वही है।" (यूहन्ना 4:25–26)।

➢ **उसके निष्पाप होने का दावा पेश किया :** जब यीशु मसीह इस संसार में दैहिक रूप धारण किये हुए थे, तो बहुत से धार्मिक अगुवों व फरीसियों ने उसकी परीक्षा की। उसने कहा, "कोई भी जन पाप रहित नहीं है, लेकिन वह निष्पाप था" (यूहन्ना 8:46–47; यूहन्ना 8:28–29)। अद्भुत बात यह है कि कोई भी जन यीशु में कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाया। जिस अपराध के लिये उसे दोषी ठहराया गया या उसे सजा मिली, वह यहूदियों का राजा होना था (यूहन्ना 10:36–38; लूका 23:40–43)। बाद में पौलुस ने इस दावे का मतलब समझाया (2 कुरिन्थियों 5:21)।

➢ **उसने परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र द्वार होने का दावा किया :** उसने अपने अनुयायियों को बताया कि परमेश्वर तक जाने का मार्ग वह ही है, और परमेश्वर पिता उसमें होकर प्रगट हुआ है। समय–समय पर उसने "मैं हूँ" वाक्य का उपयोग किया, जिस वाक्य का उपयोग हम स्वयं परमेश्वर को निर्गमन 3:14 में करते हुए पाते हैं। इन वाक्यों को पढ़ें :

- o "अब्राहम से पहले मैं था" (यूहन्ना 8:58)।
- o "द्वार मैं हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करता है, तो वह उद्धार पाएगा" (यूहन्ना 10:9)।
- o "अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:11)।
- o "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीवित रहेगा" (यूहन्ना 11:25)।
- o "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)।

➢ **उसने दावा किया कि वह पापों को क्षमा कर सकता है :** यीशु ने न केवल लोगों को चंगा किया, बल्कि उनके पापों को भी क्षमा किया। क्योंकि पाप तो परमेश्वर के विरूद्ध किया जाता

है, अतः उसे परमेश्वर के अलावा और कोई कैसे क्षमा कर सकता है? (लूका 5:20–21; लूका 7:48–49)

- **उसने दावा किया कि वह अनन्त जीवन दे सकता है :** यीशु ने लोगों को अनन्त जीवन खोजने का मार्ग नहीं बताया, बल्कि उसने कहा कि वह स्वयं ही अपने आप से उन्हें अनन्त जीवन दे सकता है। यीशु पर विश्वास करने से ही हमें अनन्त जीवन की प्राप्ति होती है। मनुष्य इस प्रकार की (यहाँ तक कि कोई भविष्यद्वक्ता भी) पेशकश नहीं कर सकता (यूहन्ना 10:17; यूहन्ना 10:28–30)।

- ये सारे वाक्य हमें बताते हैं कि वह सच में परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है, बल्कि वह स्वयं परमेश्वर है – अर्थात् सब कुछ एक में ही समाया है। यीशु ने लोगों से यह नहीं कहा कि वह परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता, एक शिक्षक, एक मार्गदर्शक है, बल्कि उसने कहा कि वह परमेश्वर द्वारा किया गया वायदा या प्रतिज्ञा है।

❖ **दूसरे यीशु के बारे में क्या कहते थे? :** चारों सुसमाचारों के बाद नये नियम में लिखी गईं पुस्तकें प्रेरितों व परमेश्वर के अभिषिक्त लोगों द्वारा लिखी गईं पत्रियाँ हैं, जिन्होंने परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशनों को अपनी पत्रियों में लिखा था। इन पत्रियों में यीशु के द्वारा कहे गए कथनों का वर्णन किया गया है।

- **परमेश्वर का पुत्र –** यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा गया। ऐसा कहे जाने से उसका महत्व कम नहीं हो जाता, बल्कि इसके बावजूद वह वही शक्ति, अधिकार और आदर रखता है। यीशु ने खुद को एक ऐसे पुत्र के रूप में प्रगट किया, जो पिता के पास से आया है, और जो अपने पिता से घनिष्टता से बातें कर सकता है। दूसरे लोगों ने भी उसे परमेश्वर का पुत्र कह कर के सम्बोधित किया।

  - 1 यूहन्ना 5:20
  - मत्ती 14:33
  - लूका 22:70
  - यूहन्ना 20:18

- **मनुष्य का पुत्र –** यह वह उपनाम था, जिसे यीशु ने सबसे अधिक प्राथमिकता प्रदान की थी, उसने नये नियम में 88 बार इस उपनाम का उपयोग किया। मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो वह किसी भी "व्यक्ति" का सामान्य उपनाम प्रतीत होता है। लेकिन यह उपनाम दर्शाता है कि यीशु में दो स्वभाव विद्यमान थे। वह सम्पूर्ण ईश्वरीय तथा पूर्ण मानवीय व्यक्ति था। यह हमें दानिय्येल नबी के 7:13–14 वचनों को भी स्मरण दिलाता है, जो हमें एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताते हैं, जिसके पास अनन्त राज्य है और जगत की सारी जातियाँ उसकी आराधना करेंगी। इसके अतिरिक्त यीशु ने कहा कि मनुष्य के पुत्र के विरोध में बोलना परमेश्वर की निन्दा करना है।

  - मत्ती 12:40
  - मत्ती 16:27
  - प्रेरितों के काम 7:56

- **मसीहा या मसीह प्रभु –** यहूदी लोग बड़ी उत्सुकता के साथ मसीह के आने का इन्तज़ार कर रहे थे, जो उनका उद्धार करने के लिये आने वाला था। वे अपेक्षा करते थे कि कोई सैन्य या

राजकीय पदाधिकारी आकर उन्हें राजनैतिक दबाव से छुटकारा देगा। लेकिन यीशु इसके बजाए उन्हें उसके पापों से मुक्ति दिलाने के लिये आया। यीशु के अनुयायियों ने पहचाना कि उस में मसीहा की सारी भविष्यद्वाणियां पूरी होती हैं। "मसीह" शब्द का अर्थ अभिषिक्त जन है। "प्रभु" का अर्थ राज्य करने वाला या अधिकार रखने वाला है। दोनों ही शब्द मसीह के बारे में बताते हैं।

- यूहन्ना 10:4042
- मरकुस 8:29
- गलातियों 3:16

➢ **परमेश्वर का वचन –** बाइबल का लेखक यीशु को परमेश्वर का वचन कर के सम्बोधित करता है। यह एक ऐसा उपनाम है, जो प्रगट करता है कि यीशु मसीह बैतलहम में शारीरिक रूप में जन्म लेने से पहले भी विद्यमान् थे। वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने वाला, संसार की सृष्टि करने वाला, और स्वयं मानवीय रूप में परमेश्वर को प्रगट करने वाला था। यूनानियों ने जब पहली बार "वचन" शब्द को सुना होगा, तो उनके लिये इस शब्द का अर्थ "ईश्वरीयता" तथा "मानवता" के बीच एक सेतु या पुल होगा। यह उपनाम दर्शाता है कि परमेश्वर की इच्छा व स्वभाव, यीशु मसीह में प्रगट किये गए हैं।

- यूहन्ना 1:1–3
- यूहन्ना 4:25–26
- यूहन्ना 14:9
- कुलुस्सियों 1:15–17

❖ **आप यीशु के बारे में क्या कहते हैं?** हमें यह देखना आवश्यक है कि हम यीशु द्वारा किये गए दावों पर विश्वास करते हैं या नहीं।

➢ यीशु मसीह ने मानवीय रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर होने का दावा किया, जो परमेश्वर पिता के समान व उसके साथ एक था। उसने दावा किया कि वह पहले से विद्यमान है, और सारी सृष्टि उसी के द्वारा और उसी के लिये तैयार की गई है। यीशु पापों को क्षमा करता है और स्वयं पापरहित है।

➢ मार्था, जो उस लाज़र की बहन थी, जिसे यीशु ने मृतकों में से जीवित किया था, यीशु पर विश्वास करती थी। यूहन्ना 11 अध्याय के इस भाग में मार्था से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा गया है; जिसका उत्तर हमें भी अवश्य देना चाहिये : *"क्या तू विश्वास करती है?" "यीशु ने उस से कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?' उस ने उस से कहा, 'हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।"* (यूहन्ना 11:25–27)।

➢ हमें निर्णय लेना आवश्यक है कि हम यीशु की बातों पर विश्वास करते हैं, और हम उस पर भरोसा करेंगे।

चर्चा

- ❖ यीशु मसीह के दावों में से कौन सा दावा आपको अचम्भित करता है?
- ❖ आपके विचार से मसीह की पहचान एक विवादास्पद विषय क्यों है?
- ❖ यदि हम यीशु के दावों पर विश्वास करते हैं, तो हमें अपने जीवन में किन बदलावों को करने की आवश्यकता पड़ेगी?
- ❖ आपके हिसाब से परमेश्वर ने बाइबल के लेखकों को यीशु के जीवन के वर्णन को विशेष रूप से लिखने के लिये क्यों प्रोत्साहित किया? यह लेख बाकी धर्मों व मतों के धर्मशास्त्रों से किस प्रकार अलग है?

प्रार्थना

अपने प्रतिभागियों के लिये प्रार्थना करते हुए समाप्त करें। प्रार्थना करें कि वे यीशु को पहचानें और यह जानें कि यीशु में होकर ही परमेश्वर ने अपने आप को प्रगट किया? प्रार्थना करें कि प्रभु व मसीह के रूप में वे उसका आदर करें तथा समझें कि उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।